❍ Year : 6 ❍ Issue : 21 ❍ July 2021 ❍ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT

ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

(An International Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal)

Special Note :

Anti National Thoughts are not acceptable.

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।
सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान
Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907 • Website : www.gtirj.com

जनसंचार और विज्ञापन

डॉ. संगीता रानी

आज का समय सूचना क्रांति का है। सूचना और संचार के बड़े माध्यम आज हमारे इर्द-गिर्द ही नहीं हमारे वैयक्तिक जीवन से भी गहरे जुड़े हैं। आज प्रत्येक मनुष्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन माध्यमों से गहरे जुड़ा हुआ है। जनसंचार माध्यमों की गहरी पहुँच आज हमारे जीवन में हो चुकी है। हमारे दैनंदिन जीवन का एक बड़ा हिस्सा इन माध्यमों के साथ गुजरता है। यह समय कई रूपों में इन माध्यमों के साथ गुजरता है। समाचारों के रूप में, विचार, आपसी बातचीत, ज्ञान-विज्ञान, खेल-कूद समेत मनोरंजन के विविध रूपों इत्यादि में मानव समूह का बड़ा हिस्सा इन माध्यमों के साथ समय गुजारता है। कोविड के प्रकोप के बाद तो आनलाइन खरीददारी से लेकर आनलाइन शिक्षा, बैठकें और वर्क फ्राम होम के चलन ने तो जनसंचार के माध्यमों पर हमारी निर्भरता कई गुना बढ़ा दी है। 2019 की एक सूचना के अनुसार भारत में 18 वर्ष की आयु से अधिक के लोग 24 घंटे में से 5 घंटे से अधिक इन माध्यमों के साथ बिताते हैं।[1] यह बताने की आवश्यकता नहीं कि कोविड के प्रभाव के बाद इस समय में कितनी बढ़ोत्तरी हुई होगी। जनसंचार के माध्यमों की यह पहुँच और इनका यह स्वरूप और प्रभाव बिलकुल नया है। प्राचीन मानव समाजों में भी जनसंचार की प्रक्रिया और उसके विविध रूप मौजूद रहे हैं लेकिन उनका स्वरूप और जीवन में दखल इस तरह का कभी नहीं रहा।

मौजूदा जनसंचार माध्यमों के व्यापक प्रभाव और दखल की एक बड़ी वजह इनका स्वरूप, इतनी तकनीकी जटिलता, वृहद संजाल और तीव्र गति और इनका रणनीतिक उपयोग भी है। पिछली सदी के आखिरी दशक में सोवियत संघ के विघटन, विश्व की दो महाशक्तियों के बीच शीत युद्ध की समाप्ति और एकध्रुवीय विश्व में नयी विश्व व्यवस्था के उदय ने नयी स्थितियों को जन्म दिया। रूस में राजनीतिक व्यवस्था के रूप में साम्यवादी व्यवस्था के विघटन ने उदारवादी खेमे को जबर्दस्त बढ़त दी। उदारवाद की खासियत है कि वह बड़ी चालाकी से विज्ञान, पूंजीवाद और उद्योग को एकसाथ जोड़कर इन्हें मानव और मानवता की प्रगति से जोड़ देता है।[2] इसी योजना के तहत पूंजीवादी गुट ने नयी विश्व व्यवस्था में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए प्रयास शुरू किए। बड़ी पूंजी, सैनिक और व्यापारिक शक्तियों ने मिलकर नवीन तकनीक से सम्पन्न व्यापक उद्देश्य के साथ जनसंचार के नए साधनों की संधान शुरू की।[3] इस पूरी योजना से संबद्ध सूचना का एक प्रत्यक्ष प्रमाण थी अमेरिका के विदेश विभाग की पत्रिका 'फारेन अफेयर्स'। इसमें 1996 में कहा गया कि 'इक्कीसवीं सदी अमेरिका के शानदार प्रभुत्व का दौर होगा, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र का नया सिक्का है सूचना, और सूचना के माध्यम से अपने प्राकृतिक और विकसित शक्ति के स्रोतों की क्षमता को द्विगुणित करने की दशा में अमेरिका दूसरे देशों से ज्यादा अनुकूल स्थिति में होगा।'[4] यह पूरा आकलन एक सुचिंतित रणनीतिक योजना का हिस्सा थी, जिसके पीछे थी व्यापारिक घरानों की अकूत पूंजी और सैन्य ताकत। इस गठबंधन द्वारा प्रायोजित संचार तंत्र एवं उसकी संचार क्षमता की पूरी योजना को भूमंडलीकरण के नारे के साथ पूरी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया गया। जिस तरह भूमंडलीकरण के कर्णधारों ने इसे सारी समस्याओं के निवारक और दुनिया में सुख, शांति और बराबरी के तौर